प्र.शि.नि./प्रकाशन/313/2022–23

मूँगफली की आधुनिक खेती

लेखकगण

डॉ. हर्षा बी. आर., डॉ. नंदिशा सी.बी., डॉ अनुराधा रंजन कुमारी
शिवम् चौबे एवं डॉ. अनुपमा कुमारी

कृषि विज्ञान केन्द्र
भगवानपुर हाट, सिवान
डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर – 848125 (बिहार)

Printed By - ***New Print Zone***, Samastipur # 9771222492

भारत में दलहन, तिलहन खाद्य व नकदी सभी प्रकार की फसलें उगायी जाती है। तिलहनी फसलों की खेती में सरसों, तिल, सोयाबीन व मूंगफली आदि प्रमुख है। मूंगफली एक ऐसी फसल है। जिसका कुल लेग्युमिनेसी होते हुए भी यह तिलहनी के रूप में अपनी विशेष पहचान रखती है। मूंगफली के दाने में 48–50 प्रतिशत वसा और 22–28 प्रतिशत प्रोटीन तथा 26 प्रतिशत तेल पाया जाता है। मूंगफली की खेती 100 से0मी0 वार्षिक वर्षा वाली क्षेत्रों में आसानी से की जा सकती है।

मूंगफली की खेती करने से भूमि की उर्वरता भी बढ़ती है। किसान की भूमि सुधार के साथ किसान की आर्थिक स्थिति भी सुधर जाती है। मूंगफली का प्रयोग तेल के रूप में कपड़ा उद्योग एवं बटर बनाने में किया जाता है। जिससे किसान भाई अपनी आर्थिक स्थिति में भी सुधार कर सकते हे। मूंगफली की आधुनिक खेती के लिए निम्न बातें ध्यान में रखना बहुत ही जरूरी है। मूंगफली की बीज, बुआई का समय एवं बुआई हेतु दूरियॉ किसान भाई को मूंगफली की बुआई हेतु बीज दर की मात्रा 70–80 किग्रा0/हे0 रखना चाहिए। यदि किसान भाई मूंगफली की बुआई कुछ देरी से करना चाहते हैं तो बीज की मात्रा को 10 से 15 प्रतिशत तक बढ़ा लेना चाहिए।

मूंगफली की खेती बिहार में दो बार किया जाता है।

1. **खरीफ मूंगफली:** जो कि जून के दूसरे पखवाड़े से अंतिम जूलाई तक किया जाता है। उसकों बालु वाले क्षेत्रों में 15 अगस्त तक लगा सकते है।
2. **गरमा मूंगफली:** गरमा मूंगफली की खेती 25 फरवरी से रोपाई शुरू करते है तथा 25 मार्च तक पूरा कर लेते है परन्तु बिलम्ब वाली परिस्थिति में इसे 15 अप्रैल तक बुआई कर सकते है। किसान भाई को मूंगफली की बुआई हेतु बीज की मात्रा उचित अनुशंसित को पालन करना चाहिए। मूंगफली के लिए पौधे से पौधों की दूरियॉ 10 से0 मी0 तथा पंक्ति से पंक्ति की दूरियॉ 30 सें0 मी0 रखते है।

मूंगफली की उन्नत किस्में: मूंगफली की टी0 जी0–37, एच0 एन0 जी0–10, टी0 बी0 जी0–39, एम0–13, मल्लिका, धरनी, आई0 सी0 जी0 भी0–00350, के0–06 आदि अधिक उपज देने वाली किस्में है।

उर्वरकों की मात्रा एवं देने का समय: मूंगफली की अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए उचित मात्रा में पोषक तत्वों को समय से देना चाहिए। मूंगफली की फसल को प्रति हेक्टेयर 20 किलोग्राम नेत्रजन, 30 किग्रा0 फॉस्फोरस, 45 किग्रा0 पोटाश, 200 किग्रा0 जिप्सम एवं 4 किलोग्राम बोरेक्स का प्रयोग करना चाहिए। फॉस्फोरस की मात्रा की पूर्ति हेतु सिंगल सुपर फॉस्फेट का प्रयोग करना चाहिए। नेत्रजन, फास्फोरस एवं पोटाश की समस्त मात्रा एवं जिप्सम की आधी मात्रा बुआई के समय देना चाहिए। जिप्सम की शेष आधी मात्रा एवं बोरेक्स की समस्त मात्रा को बुआई के अगभग 20–23 दिनों बाद देना चाहिए।

मूंगफली में बीज उपचार: बीज की बुआई करने से पहले बीज का उपचार करना बहुत ही लाभकारी होता है। उसके लिए कार्बेण्डाजिम 50 प्रतिशत घूलन चूर्ण के मिश्रण को 2 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। इस उपचार के बाद (लगभग 5–6 घंटे) अर्थात बुवाई से पहले मूंगफली के बीज को राइजोबियम कल्चर का एक पैकेट 10 किलोग्राम बीज को उपचारित करने के लिए प्रर्याप्त होता है। कल्चर को बीज में मिलाने के लिए आधा लीटर पानी में 50 ग्राम गुड़ छोड़कर इसे गर्म कर चासनी बना लें तदुपरान्त ठंडा होने पर इसमें 250 ग्राम राईजोबियम कल्चर का पूरा पैकेट मिलाए। जिससे बीज के ऊपर एक हल्की परत बन जाए। इस बीज को छाया में 2–3 दिन सुखाने के लिए रख दें। बुवाई प्रातः 10 बजे से पहले या शाम को 4 बजे के बाद करें। जिस खेत में पहले मूंगफली की खेती नहीं की गयी है उस खेत में मूंगफली की बुवाई से पूर्व बीज को राइजोबियम कल्चर से उपचारित कर लेना बहुत ही लाभकारी होता है।

मूंगफली की खेती में सिंचाई: मूंगफली की खेती में मुख्यतः सिंचाई की कम जरूरत होती है फिर भी यदि वर्षा न हो तो दो सिंचाई जो कि सुइया (पेगिंग) तथा फली बनते समय करनी चहिए। मूंगफली में पेगिंग लगभग 51 दिन बाद बनना शुरू होती है।

निड़ाई, गुड़ाई व खरपतवार प्रबंधन: मूंगफली की बुआई के लगभग 15–20 दिन बाद पहली निड़ाई–गुड़ाई तथा 30–35 दिन बाद दूसरी निड़ाई–गुड़ाई अवश्य करें। पेगिंग की अवस्था में निड़ाई–गुड़ाई नहीं करनी चाहिए। रासायनिक विधि से खरपतवार की रोकथाम के लिए इमाजिथापर तथा एजिल दवा का छिड़काव करें। फसल बुआई के 30 दिनों बाद।

मूंगफली की खुदाई एवं भंडारण: मूंगफली की खुदाई प्रायः तब करें जब मूंगफली के छिलके के ऊपर नसें जैसे उभर आए तथा भीतरी भाग कथई रंग का हो जाए। खुदाई के बाद फलियों को अच्छी तरह सुखाकर भंडारण करें। यदि गीली मूंगफली का भंडारण किया जाता है तो मूंगफली फफूंद के कारण काले रंग की हो जाती है जो खाने एवं बीज हेतु अनुपयुक्त होती है।

कीड़ो की रोकथाम: मूंगफली में सफेद गीडार, दीमक, हेयरी कैटर पिलर आदि मुख्य कीट काफी नुकसान पहुंचाते है जिनकी रोकथाम के लिए निम्न उपाय करें।

सफेद गीडार की रोकथाम: मूंगफली में सफेद गीडार की रोकथाम के लिए मानसून के प्रारंम्भ होते ही प्रोफेनोफॉस 50 प्रतिशत ई0सी0 2 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

दीमक की रोकथाम: दीमक की रोकथाम के लिए क्लोरोपाईफॉस 50 प्रतिशत ई0सी. साईपर मेथिलीन 4 प्रतिशत ई0सी0 2 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

हेयरी कैटर पिलर की रोकथाम: हेयरी कैटर पिलर कीट का प्रकोप लगभग 40–45 दिनों बाद दिखाई पड़ता है। इस कीट की रोकथाम के लिए इमैक्टीन बेजोएट 5 प्रतिशत एस0जी0 0.5 ग्राम प्रति लीटर या प्रोफनोफॉस 40 प्रतिशत ई0सी0. साईपर मेथिलीन 4 ई0सी0 2 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर स्प्रे करें।

बीमारियों की रोकथाम: मूंगफली में कॉलर राट, ब्रड नेक्रोसिस तथा टिका रोग प्रमुख है। जिनकी रोकथाम के लिए निम्नलिखित उपाय करें।

कॉलर रॉट : बीजाई के बाद सबसे ज्यादा नुकसान कॉलर राट व जड़ गलन द्वारा होता है। इस रोग से पौधे का निचला हिस्सा काला हो जाता है व बाद में पौधा सुख जाता है। सूखे भाग पर काली फफूंद दिखाई देती है। इसकी रोकथाम के लिए बुवाई से 15 दिन पहले 1 किलोग्राम ट्राइकोडरमा पाउडर प्रति एकड़ की दर से 50–100 किग्रा0 गोबर की खाद में मिलाकर दें व बुवाई के समय भूमि में मिला दें। (बुआई के समय 10 ग्राम ट्राइकोडरमा पाउडर प्रति किलो की दर से बीज उपचारित करें। गर्मियों में खेत की गहरी जुताई करके खुला छोड़ने से भी प्रकोप कम होता है। खड़ी फसल में जड़ गलन की रोकथाम के लिए 2 ग्राम कार्बेण्डाजिम 50 प्रतिशत डब्लू0पी0 प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

पीलिया रोग: बरसात शुरू होते समय फसल पीली होने लगती है व देखते ही देखते पूरा खेत पीला हो जाता है। यह रोग लौह तत्व की कमी से होता है। इसकी रोकथाम के लिए 75 ग्राम फेरस सल्फेट या 15 ग्राम नाईट्रिक अम्ल प्रति 15 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

बड नेक्रोसिस: इस रोग की रोकथाम के लिए किसान भाईयों को सलाह दी जाती है कि जून के चौथे सप्ताह से पूर्व बुआई न करें फिर भी अगर इस रोग का प्रकोप खेत में हो जाता है तो

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
कृषि विज्ञान केन्द्र, भगवानपुर हाट सिवान
(डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रिय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर)
मार्गदर्शक– डॉ0 मधुसुदन कुण्डु, निदेशक प्रसार शिक्षा